13

सूरदास के पद

पाठ-प्रवेश

महाकवि सूरदास ने बाल कृष्ण के मनोहर रूप का वर्णन बड़े ही मार्मिक रूप से किया है। माँ यशोदा के साथ बाल कृष्ण का तर्कपूर्ण व्यवहार अद्‌भुत है। आइए, सूरदास के ऐसे ही पदों का आनंद लें—

(1)

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए॥
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहिं पिए॥
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिए॥

(2)

मैया! मैं नाहिं माखन खायो।
खयाल परै ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायो॥
देखि तुही छींके पर भाजन ऊँचे धरि लटकायो।
हौं जु कहत नान्हें कर अपने में कैसें करि पायो॥
मुख दधि पोंछि बुद्‌धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो।
डारि सांटि मुसकाई जशोदा स्यामहिं कंठ लगायो॥
बाल बिनोद मोद मन मोह्यो भक्ति प्रताप दिखायो।
सूरदास जसुमति को यह सुख सिव बिरंचि नहिं पायो॥

शब्दार्थ

सोभित—शोभायमान; **नवनीत**—माखन; **घुटुरुनि**—घुटनों के बल; **रेनु**—मिट्‌टी या धूल; **दधि**—दही; **चारु**—सुंदर, मनोहर; **लोचन**—आँख; **मनु**—मानो, मत्त-मस्त; **मधुप**—भौंरा; **केहरि**—शेर